अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

नारीलोक

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं

अंक 261 पंजीकृत कार्यालय : 'रोहिणी', अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं (राजस्थान) मार्च 2020

WOMEN ON WHEEL

WOW

RESPECT

mom

EMPOWERING WOMEN TOGETHER

अध्यक्षीय

प्यारी बहनों,

महिला दिवस एवं होली की अनंत अनंत शुभकामनाएं!

एक चिंगारी बहुत होती है चूल्हे को गरम करने के लिए,
एक पत्थर बहुत होता है आकाश में छेद करने के लिए,
एक नाव काफी होती है समुद्र को पार करने के लिए,
एक सपना काफी है चांद को मुठ्ठी में लेने के लिए,
अनगिनत बूंदे जरूरी है समुद्र को बनाने के लिए,
कुछ फूल चाहिए माला बनाने के लिए,
एक महिला काफी होती है घर को स्वर्ग बनाने के लिए,

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है संस्कृत में एक श्लोक है – यस्य पूज्यतें नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताः। अर्थात जहां नारी की पूजा होती हे वहां देवता निवास करते हैं। जब भी घर में बेटी का जन्म होता है तब कहते है लक्ष्मी आयी है और जब बहु घर में पैर रखती है तब कहते है लक्ष्मी आई है। बेटा जन्म लेता है तब कोई नहीं कहता कि कुबेर आया है या विष्णु आया है।

माता के रूप में नारी, धरती पर सबसे पवित्रतम रूप में है। माता यानि जननी। मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है। हम देखते हैं कि Woman में Man स्वयं समाहित है। She में He समाहित है। क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री नारी ही रही है कृष्ण – मां देवकी का पुत्र, कार्तिकेय – मां पार्वती का पुत्र। किन्तु बदलते समय में संतानों ने अपनी मां को महत्व देना कम कर दिया है। सब धन लिप्सा व अपने स्वार्थ में डूबते जा रहे हैं। वर्तमान में उसे भोग की वस्तु समझ कर अपने अपने तरीके से इस्तेमाल कर रहा है, यह बेहद चिन्ता जनक बात है। लेकिन हमारी संस्कृति को बनाएं रखते हुए नारी का सम्मान कैसे किया जाय इन पर विचार करना आवश्यक है।

नारी का सारा जीवन पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में बीत जाता है। माता–पिता की छत्र–छाया में रहते हुए घर का काम काज करना होता है। साथ ही पढ़ाई भी जारी रहती है जबकि लड़कों को पढ़ाई लिखाई के सिवा कोई काम नहीं होता।

विवाह के पश्चात् तो महिलाओं पर भारी जिम्मेदारी आ जाती है। पति, सास–ससुर, देवर–ननद की सेवा के पश्चात् उसके पास अपने लिए समय कहां बचता है। संतान के जन्म के बाद तो कोल्हू के बैल की तरह खटती रहती है। घर परिवार, चौके चूल्हे में एक आम महिला का जीवन कब बीत जाता है पता ही नहीं चलता। कई बार तो वह अपने परिवार के लिए अपने अरमानों का भी गला घोंट देती है।

महिला जगत की जननी, परिवार का गौरव, समाज का सम्मान और संस्कृति की धरोहर मानी जाती है। भारत में महिलाओं ने अपनी मेहनत और काबिलियत के दम पर सफलता के कई ऐसे मुकाम हासिल किए है जिन्होंने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। विकास के इस लम्बे सफर में मील का पत्थर बनने वाली अध्यात्म की उज्जवल दीप शिखा असाधारण **साध्वी प्रमुखाश्री कनक प्रभाजी** सम्पूर्ण दृष्टि से आपकी बोद्धिता प्रशासनिक क्षमता और प्रतिभा ने बड़े–बड़े दिग्गज विद्वानों और कवियों को चमत्कृत करने की विलक्षण प्रतिभाएं दिखाई देती है। **अरूधंतिराय**–मशहूर लेखिका, **सुनीता विलियम्स**–अंतरिक्ष में जाने वाली महिला,

किरण बेदी–भारत की पहली आईपीएस महिला अधिकारी। **सुनीता नारायण**–पर्यावरणविद्, **मेधा पाटकर**–जिन्होंने सरदार सरोवर परियोजना में 36 हजार गांव के लोगों को अधिकार दिलाने की लड़ाई लड़ी। **लता मंगेशकर**–स्वर सम्राज्ञी, दूसरी तरफ वो भी महिलाएं जिन्होंने नारी शक्ति को इतिहास में अमर बना दिया। **झांसी की रानी** का बलिदान, **पन्नाधाय मां** की कुर्बानी, **रानी पदमावती** का जौहर, **हाड़ा रानी** का बलिदान आदि अनेक घटनाओं से इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ भरे हुए है जिन्होंने देश परम्परा, समाज और शील की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया पर कभी झुकी नहीं।

महिला शक्ति है, सशक्त है, वो भारत की नारी है,

न ज्यादा, न कम, वो सबमें बराबर की अधिकारी है।

पर आजकल महिलाओं के साथ अभद्रता की परकाष्ठा हो रही है। हर रोज ही अखबारों और न्यूज चैनलों में पढ़ते व देखते है कि महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की गई या सामुहिक बलात्कार किया गया। शायद ही कोई ऐसा दिन जाता हो जब महिलाओं के साथ की गई अभद्रता का समाचार न हो। प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में दिन–पर–दिन अश्लीलता बढ़ती जा रही है जिससे नवयुवकों के मन मस्तिष्क पर बहुत ही खराब असर पड़ता है। वे इसके क्रियान्वयन पर विचार करने लगते है परिणाम होता है दिल्ली व हैदराबाद गैंगरेप जैसा जघन्य व घृर्णित अपराध।

हमारी महिलाओं व बेटियों को कब मिलेगा अपनी जमीन पर, अपनी हवाओं में, अपने आकाश के नीचे सुरक्षा के साथ सांस लेने का अधिकार। आखिर कौन है वह? कोई डूबते सूरज की किरण या आइने में बेबस सी कोई चुप्पी। माँ की आंखों का कोई आंसू या बाप के माथे की चिन्ता की लकीर।

हर साल की तरह एक बार फिर ये सवाल जिन्दा हो गया है देश दुनिया में महिलाओं के सम्मान और अधिकार के नाम पर अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जा रहा है। आधी आबादी की पूरी आजादी के जोर शोर के साथ ढेरों वादे किये जा रहे हैं।

जागो बहनों जागो! मातृत्व की रक्षा के लिए क्रांति की रणभेरी पर उतर आओ, कमान थामलो हाथ में स्वयं की सुरक्षा की। अवहेलना, भ्रूण हत्या और नारी की अहमियत न समझने वालों को फिर समझाना होगा कि इंसान को यह नहीं भूलना चाहिए कि नारी द्वारा जन्म दिए जाने पर ही वह दुनियां में है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि का यथोचित सम्मान दिया गया है अतः उसे उचित सम्मान दिया ही जाना चाहिए। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्यार प्रकट करते हुए इस दिन को महिलाओं के आर्थिक राजनैतिक और सामाजिक उपलब्धियों के उपलक्ष में उत्सव के तौर पर मनाया जाता है।

अर्न्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर हमें प्रभावी पहचान बनानी है शक्ति सम्पन्न बनना है आन्दोलित करना है स्वयं को, जागरूकता फैलानी है महिलाओं की सुरक्षा की, अपील करनी है समाज से, वकालत करनी है नारीत्व की, हमारी कोशिश बरकरार रहेगी, हमें पूरा भरोसा है कि हम समाज में चेतना लाने के लिए सफल किरदार बनेगें।

खुद से जीतने की जिद है, मुझे खुद को ही हराना है,

मैं जमाने की भीड़ नहीं, मुझमें ही जमाना है।

आपकी

पुष्पा केंद

ऊर्जावाणी

महिला समाज दिन–दिन प्रगतिशील बनता जा रहा है। यह उसके उदीयमान भविष्य का संकेत है। महिला समाज के लिए पहली आवश्यकता है कि उसका दृष्टिकोण सम्यक् हो। बहनें अपने आपको किसी से कम न समझें। आप भी शक्ति संपन्न है। अपने आपको पुरुषों से उच्च समझना जरूरी नहीं है किन्तु स्वंय को हीन न मानें। किसी से कम न मानें। मेरा विश्वास है कि कई ऐसे काम है जिन्हें कितने ही पुरुष मिलकर नहीं कर सकते, पंडित और दिग्गज विद्वान नहीं कर सकते, उनको नारियां कर दिखाती है। बहनें शांति व संतोष का जीवन जीना सीखें। सादगीमय और सच्चरित्रता का जीवन जीना सीखें। ऐसा जीवन न केवल स्वंय के लिए ही अपितु परिवार, समाज व राष्ट्र के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

आचार्य श्री तुलसी

चाहे भ्रूण हत्या का मामला हो या दहेज हत्या का, महिलाओं का इस संदर्भ में ज्यादा दायित्व है। महिलायें अपनी महिला जाति को बचाने के लिए आगे आये। इस समय उनके अस्तित्व का सवाल पैदा हो गया है। अगर महिलायें न चेती तो बहुत बड़ी विभीषिका उनके सामने है। दहेज उत्पीड़न और भ्रूण हत्या की समस्या तभी सुलझेगी जब आदमी का चिन्तन बदलेगा। सबसे पहले इस संदर्भ में जनता का अज्ञान मिटना चाहिए। उसका भ्रम मिटना चाहिये, उसकी सोच परिस्कृत होनी चाहिए।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ

Doing a work which gives pleasure, but leads to bitter concequence is not wise. Do such work, which leads to better consequence though it may seem unpleasant at present.

Acharya Mahasharman

महिलाओं के पास मां की ममता हेती है। उन्हें लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा का प्रतीक माना जाता है। आज का युग परम्पराओं के प्रति इतना विद्रोही क्यों हो रहा है? इस प्रश्न पर गंभीरता से सोचा जाए तो समस्या की डोर का एक छोर अभिभावकों से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। अभिभावकों को तीन श्रेणीयों में विभक्त किया जा सकता है–

1. सुख–सुविधाभोगी।
2. दायित्व को अनदेखा करने वाले।
3. जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण रखने वाले।

प्रथम श्रेणी के माता पिता अपने बच्चों को अपनी जिन्दगी का अंतरंग हिस्सा नहीं बनाते। उनका जीवन अपने लिए होता है। बच्चों को वे अपनी प्राइवेसी में बाधक मानते हैं। इसलिए उन्हें समय भी कम देते हैं। ऐसे लोग आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं। वे अपने बच्चों की जायज या नाजायज मांग पूरी कर देते हैं। पर जीवन के यथार्थ से उनको परिचित नहीं कराते। जीवन कैसे जीया जाता है? पारिवारिक रिश्तों में माधुर्य कैसे आता है? बड़ों के प्रति कर्तव्यों को निर्वाह कैसे होता है? छोटों को साथ लेकर चलने का तरीका क्या है? मित्रों और परिचितों के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए? बच्चों को ये संस्कार कहां से मिलेंगे? केवल अपनी अस्मिता के प्रति सचेत माता–पिता अपने बच्चों को न तो जीने का बोध दे सकते है और न ही उन्हें सामाजिक बना सकते हैं।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर
साध्वीप्रमुखाश्रीजी का संदेश, नारी शक्ति के लिए बना विशेष

संवारें अपनी तकदीर : बदलें देश की तस्वीर

इक्कीसवीं शताब्दी बौद्धिक एवं भौतिक विकास की शताब्दी है। मनुष्य की इंटेलिजेंसी के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी भी विकसित हो रही है। आदमी के द्वारा किए जाने वाले अनेक कार्य रोबोट के द्वारा करवाए जा रहे हैं। चूंकि रोबोट के पास विवेक नहीं होता, करणीय-अकरणीय की भेदरेखा नहीं होती, इसी कारण यदा-कदा अनिष्ट की संभावना बनी रहती है।

बौद्धिक विकास के क्षेत्र में स्त्री और पुरुष का कोई निश्चित अनुपात नहीं है। एक समय था जब शिक्षा और कार्यक्षेत्र की दृष्टि से स्त्री के सामने कई लक्ष्मण रेखाएं थीं। किन्तु अब वह मिथक टूट गया है। देश की आधी दुनिया आज हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है। संभावना की जा सकती है कि वर्तमान में कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो महिलाओं के लिए वर्जित माना जाता हो।

हालांकि विशिष्ट क्षेत्र में महिलाओं की संख्या सीमित है, फिर भी यह तो सच है कि अर्हता और क्षमता की दृष्टि से उनको हाशिये पर नहीं रखा जा सकता। महिलाओं की क्षमताओं का मूल्यांकन और समुचित उपयोग होता रहे तो नई संभावनाओं को उजागर होने का अवकाश मिल सकता है।

इस सदी के प्रारंभ से ही स्त्री सशक्तिकरण का नारा बुलंदी पर है। महिलाओं को सशक्त होना भी चाहिए। किन्तु केवल आरक्षण के आधार पर अथवा दूसरों के बलबूते पर अर्जित होने वाली शक्ति से नया सृजन कैसे होगा? शक्ति या सृजन की निष्पत्ति क्या हो? इस प्रश्न पर गंभीरता से चिन्तन करने की अपेक्षा है।

''अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल'' एक ऐसी संस्था है, जिसे आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण जैसे युगनायकों के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में काम करने का अवसर मिला है। लगभग साठ हजार से अधिक महिलाएं संस्था के बैनर तले कार्यरत है। संस्था का अपना गणवेश है और विशेष योजनाएं हैं। इनके द्वारा महिलाओं ने अपनी तकदीर संवारने में सफलता प्राप्त की है।

महिलाएं सृजनशील हैं, निर्मात्री हैं। सबसे पहले वे महिला जाति का नया निर्माण करें। उसके बाद हर महिला अपने परिवार के संस्कार-निर्माण का जिम्मा उठाए। व्यक्ति-व्यक्ति के निर्माण से परिवार, समाज व देश के निर्माण की पृष्ठभूमि मजबूत होगी तो आने वाले कल की तस्वीर बदली जा सकेगी।

अपेक्षा यह है कि पहले उस तस्वीर का सुन्दर सा रेखाचित्र बनाया जाए, फिर उसमें रंग भरने की पूरी तैयारी की जाए। हर महिला अपने समय, शक्ति और प्रतिभा का उपयोग पूरे जज्बे के साथ करे तो आने वाले कल की तस्वीर बदलने का सपना साकार हो सकता है।

– साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा

करणीय कार्य

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं प्रेरणा सम्मान

बहनों,

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च 2020 के अवसर पर हमें महिलाओं के मन मस्तिष्क में स्वयं के लिए आत्म सम्मान जागृत करने के अभिप्रयास से द्विपहिया वाहन रैली का वृहद स्तर पर आयोजन अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में पूरे देश में किया जा रहा है।

Women On Wheels ड्राइव को लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में सूचीबद्ध कराने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश

हमारा प्राथमिक उद्देश्य महिलाओं की समाज में अपेक्षित एवं न्यायोचित भूमिका की महत्ता को यथा स्थान प्रदान करवाने का है, लेकिन इस कार्य को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से हम इसे लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में अर्जित करवाना चाहते हैं।

इस अभिप्राय को पूरा करने के लिए, कुछ महत्वपूर्ण दिशा निर्देश आपको दिए जा रहे हैं। अतः आप सबसे अनुरोध है कि निम्न नियमों की पालना बिना किसी अपवाद के की जाए।

1. लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड के नियमों के आधार पर दुपहिया वाहन चला रही बहन की ही गिनती की जाएगी। पीछे बैठी हुई बहन की नहीं। "I Respect के placard दुपहिया वाहन पर पीछे बैठी हुई बहनें पकड़े। वाहन चला रही बहनों का पूर्ण रिकार्ड, लॉग बुक में रखा जाए और हमें प्रेषित करें। इस प्रपत्र में आपकी संस्था का पता, सभी प्रतिभागियों के नाम, हस्ताक्षर, फोन नंबर, ई-मेल, वाहन पंजीकृत क्रमांक, ड्राईविंग लाईसेन्स नं., प्रारम्भ एवं समाप्ति का समय रिकार्ड कर इसे प्रशासनिक अधिकारी द्वारा प्रमाणित कर हमें प्रेषित करें। (लोग बुक का प्रारूप, संलग्न किया जा रहा है)।
2. उक्त रिकार्ड के अतिरिक्त कृपया दो राजपत्रित अधिकारियों (Gazetted Officer Class 1) द्वारा जो कि इस रैली का हिस्सा न हो, पुष्टि स्वरूप उनके शासकीय पत्र पर आयोजन की पूरी जानकारी लें। पत्र संक्षिप्त होना चाहिए एवं उसमें कुल तय की गई दूरी, प्रतिभागियों की संख्या, प्रारंभ व समाप्ति के समय और अन्य कोई महत्वपूर्ण जानकारी जो आप उचित समझते हो, उसे सम्मलित करें।
3. स्वयं जागे और दूसरों को जगाएं - नारी सम्मान हेतु "I Respect" Online signature campaign का लॉन्च।
4. ड्राइव के रूट में स्थापित विभिन्न ट्रैफिक पुलिस चौकी या विद्यालय/महाविद्यालयों प्राचार्यों द्वारा भी लॉग बुक को प्रमाणित करवाएं।
5. ड्राइव कम से कम 3 किमी की अवश्य हो। ड्राइव की शुरुआत एवं अंत एक ही जगह पर भी हो सकती है।
6. आयोजन के दौरान लिए गए फोटोग्राफ व विडियो रिकॉर्डिं की सीडी जिसमें समय व दिनांक परिलक्षित हो रहे हो भेजें।
7. आयोजन को यदि किसी टीवी चैनल ने कवर किया हो तो उसकी एवं सभी समाचार पत्रों की कटिंग भी प्रेषित करें। प्रयास करें कि कार्यक्रम का प्रचार प्रसार वृहद स्तर पर हो।
8. पैदल चलने वाली व वाहन पर पीछे बैठने वाली बहनों, की अलग लॉग बुक एंट्री करें, जिसमें उनका नाम, फोन नंबर और हस्ताक्षर लें।
9. रैली में वाहन चलाने वाली सिर्फ महिलाएं या कन्याएं ही हो। आपके क्षेत्र में सक्रिय अन्य महिला

संघटनों, गर्ल्स स्कूल व कॉलेज को भी आमंत्रित करें।

10. वाहन चलाने वाली बहनों की संख्या, जिन 5 क्षेत्रों में सर्वाधिक होगी उन्हें सम्मानित भी किया जायेगा, और मूल्यांकन पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा।

11. अन्य स्कूल, कॉलेज व सामाजिक संगठनों से आमंत्रित सभी कन्याएं–सफेद कुर्ती व लाल दुपट्टा एवं महिलाएं ऑरेंज (गणवेश से मिलता है रंग) साड़ी पहने।

12. रैली के पश्चात् प्रेरणा सम्मान का भी आयोजन करें।

13. ध्यान रहे कि उपर्युक्त सभी साक्ष्य नीचे दिए हुए पते पर, हम तक 31 मार्च तक पहुँच जाएं इसका विशेष ध्यान रखें।

14. I Respect के placard. कार्यक्रम के बैनर, लोगो, प्रमोशनल वीडियो व सभी प्रकार की प्रचार प्रसार सामग्री whatsapp द्वारा प्रेषित की जाएगी।

कार्यक्रम संयोजिका :–

नीतू ओस्तवाल
North, West and Central Zone
5-O-1 & 2, R.C. Vyas Colony, "Suryansh"
Bhilwara-311001 (Raj.)
Mob. : 9461531077

याशिका खटेड़
East and South Zone
47, Vaidyanathan Street, 2nd Floor,
Sowcarpet, Chennai - 600001
Mob. : 9380691000, 9360505617

सभी शाखा मंडलों से निवेदन, कृपया इन सभी निर्देशों की पालना करते हुए इस ड्राइव को सफल बनाने में अपना सक्रिय योगदान दें।

पुष्पा बैद
राष्ट्रीय अध्यक्ष

महामंत्री
तरूणा बोहरा

प्रेरणा सम्मान

इस रैली में प्रबुद्धजनों को निमन्त्रण दिया जाए। यह प्रेरणा सम्मान जब रैली समाप्त होगी तब एक कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा जिसमें महिला एवं कन्या सशक्तिकरण पर विचार रखे जाएंगे और प्रबुद्ध महिलाओं को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया जायेगा। ये सम्मान 2–3 महिलाओं को भी दे सकते हैं। सभी क्षेत्र अपने स्थानीय स्तर पर किसी अति विशिष्ट व्यक्तित्व सम्पन्न महिला जो चाहे जैन न हो पर कलेक्टर, महिला आयोग की अध्यक्ष, कोई राजनेता, समाज सेवी इत्यादि महिला को ''प्रेरणा सम्मान'' से सम्मानित करें ताकि हमारी सभी बहनों को उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त हो सके एवं वह प्रबुद्ध स्त्री हमारी संस्था व धर्मसंघ से परिचित, प्रभावित हो सके।

स्व से संकल्प

बहनों! इस महिने आपको प्रतिदिन सामायिक की आराधना करनी है। सामायिक शक्ति जागरण की बहुत बड़ी साधना है, इससे मनोबल और आत्मबल बढ़ता है। यदि सामायिक का सम्यक् प्रयोग किया जाए तो 48 मिनट का समय शक्ति जागरण का बड़ा साधन बन सकता है। 48 मिनट तक न हिंसा का व्यवहार करना, न असत्य का विचार, न चोरी का, न वासना का, न मूर्च्छा का और न कलह का भाव रहे। क्षमा विनम्रता भी पराभूत नहीं कर सकता। हम विशुद्ध भावधारा में रहना सीखें।

समता जन–जन में बढ़े, हर श्रावक समता पाठ पढ़े
तेरापंथ हम सभी ने पाया, चौथे आरे सा शासन पाया
संघ संघपति भाव समर्पण, श्री चरणों में सब अर्पण
हर श्रावक की आराधना, करनी सामायिक साधना

कंठस्थ ज्ञान

भक्तामर स्त्रोत का 17, 18, 19, 20 चार पद्य याद करें एवं चौबीसी की पांचवी गीतिका 'सुमति प्रभु' की याद करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल (रोहिणी)
लाडनूं-राजस्थान

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च 2020

प्रेरणा सम्मान

सम्माननीय

.....

आचार्य श्री महाश्रमण के निर्देशन में भारतीय संस्कृति सुरक्षा, आध्यात्मिक विकास, नारी जागृति तथा जन सेवा के लिए समर्पित एक सामुहिक प्रयास का नाम है अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल "रोहिणी" लाडनूं। अध्यात्म इसका प्राणतत्व है, जो समाज कल्याण की उदात्त भावना इसके चिंतन का आधार है। इससे सम्बन्धित संस्था तेरापंथ महिला मंडल..... नारी सशक्तिकरण एवं नारी के नैसर्गिक गुणों की रक्षा हेतु कृत संकल्प है। क्योंकि नारी के सुघड़ हाथों में ही किसी देश का भविष्य आकार लेता है। आज अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर श्रीमती ..... को नारी के नैसर्गिक गुणों को सुरक्षित एवं संवर्धित करते हुए परिवार एवं समाज के आर्थिक सुदृढ़ीकरण में प्रभावशाली योगदान हेतु सम्मानित कर यह संस्था गौरव का अनुभव कर रही है।

आप अपनी नैसर्गिक क्षमताओं का संरक्षण करते हुए विस्तार देकर अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए, बच्चों की परवरिश, उच्च शिक्षा एवं बुजुर्गों के बुढ़ापे का सहारा बनकर आर्थिक स्वावलम्बन द्वारा आत्मविश्वास को उजागर किया है।

आपके स्वावलम्बी जीवन को सलाम करते हुए यही मंगल कामना करते हैं कि आप इसी आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान के साथ विकास के पथ पर बढ़ते हुए नारी की गरिमा को गौरवशाली एवं मजबूत बनाएंगे।

निर्देशन

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

पुष्पा बैद
राष्ट्रीय अध्यक्ष

महामंत्री
तरूणा बोहरा

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल.....

दिनांक 8 मार्च 2020

अध्यक्ष
.....

मंत्री
.....

कन्यामंडल करणीय कार्य

प्यारी बेटियों,

सस्नेह सादर जय जिनेन्द्र।

आनंद व उल्लास से परिपूर्ण पर्व होली व अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर अनंत शुभकामनाएं। बेटियां न केवल प्रकृति की एक कोमल व कमनीय कृति है बल्कि आपका व्यक्तित्व अनेक प्रतिभाओं का पुंज है। आपके बढ़ते कदमों की धमक व आपका विश्वास किसी भी क्षेत्र में विकास की नई ऋचाएं लिखने का जज्बा रखती है।

प्यारी बेटियों, विकास का निर्जर कभी विराम नहीं लेता। निरंतर प्रवाहमान रहता है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर हमें भी पवित्रता के साथ नए जोश व मजबूत संकल्पों के साथ निरंतर प्रवाहमान रहते हुए आगे बढ़ना है व परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल आशीर्वाद व महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्रीजी की पावन ऊर्जा प्राप्त कर प्रगति की महती मंजिलों को तय करना है।

महिला दिवस के अगले दिन ही होली का पावन पर्व है। हमें घृणा, वैमनस्य, ईर्ष्या से दूर रहते हुए अध्यात्म से परिपूर्ण होली मनाएं।

एक बार पुनः अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस व होली की हार्दिक शुभकामनाएं।

आपकी दीदी
रमन पटावरी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में इस माह आपको आयोजित करना है

में महिला मंडल के साथ संयुक्त रूप से सम्मिलित होकर इस Mission को सफल बनाने में पूरी तत्परता व ऊर्जा के साथ अधिक से अधिक संख्या में संभागी बनना है।

कन्याएं अपने गणवेश में आएं। अन्य स्कूल, कॉलेजों व सामाजिक संगठनों से आमंत्रित सभी कन्याएं सफेद कुर्ती व लाल दुपट्टा में आने का प्रयास करें।

मासिक संकल्प –

आध्यात्मिक रंगों से मनाए यह होली पर्व विशेष।
प्रातः 21 नवकार से करें अंतर्मन में प्रवेश।।
सफेद, लाल, पीला, हरा, नीले रंगों का हो समावेश।
तभी नवकार मंत्र की सार्थकता होगी विशेष।।

एक दिवसीय आंचलिक कार्यशाला का आयोजन - टमकौर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, जिला प्रशासन एवं महिला अधिकारिता के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय आंचलिक कार्यशाला ''परिष्कार'' एवं बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का सफल आयोजन महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल टमकौर के ग्राऊण्ड में दिनांक 14 फरवरी 2020 को समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी, पुण्य प्रज्ञाजी के सान्निध्य में प्रारम्भ हुआ।

समणी जी के महामंत्रोचार के पश्चात् जयपुर महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का आगाज हुआ। राष्ट्रीय ट्रस्टी सौभागजी बैद ने पूज्य प्रवर के संदेश का वाचन किया। राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य पुष्पा जी बैंगानी ने प्रमुखाश्रीजी के संदेश का वाचन किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्पाजी बैद ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि परिष्कार का दूसरा नाम विकास है। हमें अगर देश की बेटियों को अगर बचाना है, आगे बढ़ाना है तो उन्हें संस्कारी, शिक्षित व सशक्त बनाना होगा। समणी प्रतिभा प्रज्ञाजी ने बेटियों को संबोधित करते हुए प्रश्न पूछा कि बेटियों को कैसे बचाया जाए? जिज्ञासा और समाधान काफी देर तक चले। इस कार्यशाला में करीब 10 स्कूलों की 700 लड़कियों व आस पास के 10 क्षेत्रों की 300 महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। सभी क्षेत्रों को अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रमाण पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। समणी पुण्य प्रज्ञाजी द्वारा गीत का मधुर संगान किया गया। इस कार्यक्रम में सभी कन्याओं को आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित पुस्तक ''आओ जीना सीखें'' भेंट की गई।

मलसीसर थाना प्रभारी अंकेश कुमारजी व महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल के प्रधानाचार्य लोकेशजी तिवारी मुख्य अतिथि रहे। कन्या मंडल राष्ट्रीय कन्या मंडल संयोजिका प्रज्ञा नौलखा व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती मधु श्यामसुखा ने प्रभावी तरीके से ज्ञानवर्धक गेम्स खिलाए।

ट्रस्टी श्रीमती सौभाग बैद, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य श्रीमती पुष्पा बैंगानी, श्रीमती पुष्पा बोकड़िया, श्रीमती सुनीता जैन, श्रीमती मंजु भूतोड़िया, श्रीमती विमला दुगड़, श्रीमती गुलाब बोथरा, श्रीमती मधु श्यामसुखा, श्रीमती सुशीला चौपड़ा व श्रीमती संतोष बोथरा की गरिमामय उपस्थिति रही। श्रीमान विमलजी चौरड़िया, श्रीमती सायर कोठारी, प्रधानाचार्य लोकेशजी तिवारी व अंकेशजी का सम्मान किया गया, जिनका अतुल्य सहयोग इस कार्यशाला हेतु मिला। कार्यक्रम का संचानल श्रीमती गुलाब बोथरा व श्रीमती सुशीला नखत ने किया। दोपहर 3 बजे से चार बजे एक घंटे तक समणी प्रतिभा प्रज्ञाजी ने बहनों को समय देकर मेडिटेशन एवं प्रशिक्षण दिया। समणी जिज्ञासाप्रज्ञाजी ने भी अपने प्रभावी विचार रखे। पधारे हुए सभी क्षेत्रों के प्रति धन्यवाद व अपने कुशल वक्तव्य से राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की तरफ से सभी को मंगलकामना प्रेषित की।

महिला सशक्तिकरण की एक मिसाल - परिष्कार कार्यशाला

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल भीलवाड़ा एवं जिला प्रशासन महिला अधिकारिता विभाग के संयुक्त तत्वावधान में भीलवाड़ा के राजीव गांधी ऑडिटोरियम में 22-23 फरवरी 2020 को मेवाड़ स्तरीय दो दिवसीय परिष्कार एवं बेटी बचाओ, बेटी पढाओ कार्यशाला का आगाज शासनश्री साधनाश्रीजी एवं डॉ. शुभप्रभाजी के सान्निध्य में हुआ। प्रथम सत्र में कार्यशाला में शासनश्री साध्वीश्री साधनाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि मनुष्य को अपने प्रमाद एवं आलस्य त्याग कर ध्यान के अभ्यास द्वारा परिष्कार करना चाहिए। साध्वीश्री डॉ. शुभ प्रभाजी ने कहा कि नारी एक ऐसी पवित्र प्रज्ञा है जिसने हजारों दियों को आलोकित किया है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद ने नारी शक्ति को संबोधित करते हुए कहा कि हमें नकारात्मक सोच को अपने अंदर से निकालकर अपनी संकल्प शक्ति को मजबूत करना ही परिष्कार है जैसे कि कोई चीज संघर्ष करने से ही हमें प्राप्त होती है जिस तरह चंदन घिसने से खुशबू देता है हीरा तराशने के बाद ही अपनी चमक देता है उसी तरह हमें अपनी प्रतिभाओं को जगा कर हमारी आदतों, कमियों, क्रोध एवं अहं का और अपने आवेश का परिष्कार करना चाहिए। राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती तरूणा बोहरा ने कहा नारी अपनी योग्यता को स्वयं पहचाने एवं विकास करें। महिला अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक नागेन्द्र तोलंबिया ने बेटी बचाओ बेटी पढाओ पर अपने विचार व्यक्ति करते हुए भ्रूण हत्या न करने की शपथ दिलाई। इससे पूर्व कार्यशाला की शुरुआत कन्या मंडल के मंगलाचरण, महिला मंडल ने परिष्कार गीतिका के माध्यम से कार्यक्रम का आगाज किया।

राष्ट्रीय चीफ ट्रस्टी श्रीमती शांता पुगलिया ने आचार्य महाश्रमण के संदेश का वाचन, राष्ट्रीय सहमंत्री श्रीमती नीतू ओस्तवाल ने साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के संदेश का वाचन किया। महिला मंउल अध्यक्ष श्रीमती विमला रांका व सभाध्यक्ष श्रीमान् निर्मल गोखरू ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस मौके पर पूर्व बाल कल्याण अध्यक्ष श्रीमती सुमन त्रिवेदी, क्राई जिला समन्वयक श्रीमान् जितेन्द्र सिंह, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमान् अशोक पारीख, बेटी बचाओ, बेटी पढाओ की ब्रांड एम्बेसेडर सुश्री भूमिका शर्मा ने भी परिष्कार कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम संचालन मंत्री रेणु चौरड़िया ने किया। आभार अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्रीमती आनंदबाला टोडरवाल ने किया। **द्वितीय सत्र - करे परिष्कार सौम्य हो आचार - विचार - व्यवहार,** इस सत्र का शुभारम्भ तेरापंथ महिला मंडल कांकरोली के मंगलाचरण द्वारा किया गया। राष्ट्रीय कन्या मंडल सह प्रभारी श्रीमती नमिता सिंघवी व कन्या मंडल संयोजिका सुश्री प्रज्ञा नौलखा ने रोचक गेम करवाए। साध्वी श्री कांतायशाजी व नियति प्रभाजी ने अपने विचारों में कहा कि हमें अपने आचार, विचार, व्यवहार में परिष्कार करके अपने जीवन को उज्जवल बनाना है। राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य श्रीमती विजयलक्ष्मी भूरा, डॉ. श्रीमती नीना कावड़िया, डॉ. हेमलता जी नाहटा ने कहा कि समाज परिवर्तन के लिए परिष्कार जरूरी है। महिला शक्ति केन्द्र एवं घूंघत मुक्त राजस्थान से श्रीमती सुमन तिवारी ने महिला अधिकारों के बारे में बताते हुए कहा कि कैसे महिलाएं सशक्त बनें। तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा जैन संस्कार विधि से सभी कन्याओं का सामूहिक जन्म दिन

मनाया। कार्यक्रम का संचालन प्रभारी श्रीमती उषा सिसोदिया ने व आभार ज्ञापन सहमंत्री श्रीमती चंदा बाबेल ने किया।

तृतीय सत्र – परिष्कार का आह्वान शालीन हो परिधान – सत्र की शुरुआत भीलवाड़ा महिला कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुई कन्या मंडल प्रभारी विनीता सुतरिया ने सभी का स्वागत किया। राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती तरूणा बोहरा ने शालीन हो परिधान पर प्रशिक्षण दिया। राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य गुलाब जी बोथरा ने अपने विचार प्रस्तुत किए। मेवाड़ के क्षेत्रों से आई हुई कन्या मंडल व महिला मंडल ने **''हम किसी से नहीं है कम''** विषयों पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। संचालन कन्या मंडल संयोजिका सेजल दुगड़ व मनीषा हिरण ने किया।

चतुर्थ सत्र एवं समापन सत्र – परिष्कार से जाने एक दूसरे की खूबियों को – इस सत्र में भीलवाड़ा महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। स्वागत उद्‌बोधन वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमती मीना बाबेल ने किया साध्वी श्री कुशल विभाजी ने अपने वक्तव्य में परिष्कार शब्द का विश्लेषण किया। साध्वीश्री डॉ. शुभ प्रभाजी ने अपने प्रेरणा पाथेय में महिला अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए अपने व्यक्तित्व में निखार लाएं और स्वभाव का परिष्कार करें। राष्ट्रीय कन्या मंडल सह प्रभारी नमिता सिंघी ने इंप्रूव योगा सर्कल ऑफ कॉन्फिडेंस सब्जेक्ट पर विशेष प्रशिक्षण दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद ने तेरापंथ महिला मंडल भीलवाड़ा के कार्यों की सराहना की व आगामी 2020 के आचार्यश्री महाश्रमणजी के चातुर्मास के लिए मंगल कामना व्यक्त की। संपूर्ण मेवाड़ से पधारे क्षेत्रों को सम्मान पत्र प्रदान किया गया। राष्ट्रीय पदाधिकारियों को भी सम्मान पत्र प्रदान किये गये। उपाध्यक्ष श्रीमती मैना काठेड़ ने मंच संचालन किया। राष्ट्रीय सह मंत्री नीतू ओस्तवाल, स्थानीय अध्यक्ष विमला रांका व सहमंत्री मधु दुगड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया। वृहद स्तर पर आयोजित परिष्कार कार्यशाला में मेवाड़ से समागत लगभग 800 से अधिक महिला सदस्यों की सहभागिता रही।

रिश्तों की किताब बने आफ्ताब

दिसम्बर माह की नारीलोक में हमने ''स्व से शिखर तक'' की दूसरी इकाई (WE) हम पर निबन्ध प्रतियोगिता रखी थी। जिसका विषय था ''रिश्तों की किताब, बने आफताब''। 150 शब्दों में इस विषय काफी क्षेत्रों से प्रथम आने वाली बहिनों के नाम हमारे पास आए। सभी विचार प्रशंसनीय थे। निम्न तीन बहिनों के विचार अति प्रशंसनीय थे।

प्रथम – श्रीमती रेखा कच्छारा, डोंबीवली, मुंबई, द्वितीय – श्रीमती सुनीता जैन, सेलम, तृतीय – श्रीमती संगीता दुगड़, श्री डूंगरगढ़।

प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली रेखा कच्छारा के विचार :–

दाम्पत्य जीवन एक बहुत ही मधुर और नाजुक रिश्ता है। पर आज एक ही पन्ने के यह दो पृष्ठ अपनी जिदंगी अपनी–अपनी शर्तों पर जीना चाहते हैं। जीवनसाथी कम और प्रतिस्पर्धी अधिक बन गए है। जिससे हो रहा है परिवारों का विघटन। कुछ अनमोल सूत्रों से रिश्तों की किताब का हर पन्ना बनेगा तेजस्वी! आफताब।

एक स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। इसलिए सबसे पहले अप्पाणं विप्पसायामं–स्वयं को प्रसन्न रखो। एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास यह है स्नेह सूत्र का धागा। एक दूसरे के प्रति भीतर में प्रेम और करूणा इतनी सघनता से बहे कि क्रोध एवं अहंकार का कचरा स्वतः बहकर अनस्नल साफ हो जाए। सच्चे रिश्तों की खूबसूरती एक दूसरे की गलतियां सहन करने में है। किसी भी परिस्थिति में धैर्य एवं संतुलित सोच से समस्या का समाधान पा सकते है। माना कि आज सभी के पास समय की कमी है, पर कम समय में भी एक दूसरे को एहसास दिलाएं कि वे आपके लिए कितने खास है। सामंजस्य के अभाव में छोटा सा मतभेद भी जीवनरस को पी लेता है। सकारात्मक सोच और शांत स्वभाव आपके आचरण के साक्षी बने। हम जानते है कि कर्मो की विचित्रता के कारण हम दंपत्ति के रिश्ते में बंधे हुए जरूर है, पर आखिर हर आत्मा एक स्वतंत्र आत्मा है। इसलिए हम एक दूसरे पे कटाक्ष करने के बजाय एक–दूसरे की भावनाओं को समझने का प्रयास करें। रिश्तों की चमक समय की असंख्य परतों के नीचे कहीं दब न जाए, इसलिए सभी दंपत्ति से मेरा नम्र निवेदन–सद्‌गुणों के मोती को अपने स्वभाव की माला में पिरोकर बिखरते परिवार को फिर से नई संजीवनी देकर एक सूत्रता के धागे में बांधकर रखे। मेरा यह निबंध जन–जन में 'रिश्तों का अमृत पान' कराने में योगभूत बने

यही मंगलकामना।

अंत में अपनी बात ''आज नहीं है मेरे जीवनसाथी मेरे साथ
पर हमारे रिश्तों की आफताब है कुछ खास।।

द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली सुनीता जैन के विचार :–

एक दूसरे के साथ जुड़ाव का एहसास ही रिश्ता कहलाता है। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि ''जीवन में ज्यादा रिश्ते होना जरूरी नहीं है, पर जो रिश्ते है उनमें जीवन होना जरूरी है''। समय के साथ–साथ एक वृक्ष की तरह रिश्तों को भी संयम, सहिष्णुता और आत्मीयता रूपी खाद एवं पानी की आवश्यकता होती है।

आफताब की रोशनी जहां को रोशन करती है तो क्यों न हम हमारे रिश्तों की किताब में अपनत्व, प्रेम, समझदारी, जिम्मेदारी, विश्वास, आदर, सम्मान, निःस्वार्थ भावना व सकारात्मक सोच जैसे पन्नों को जोड़े ताकि रिश्तों की हमारी अपनी दुनिया महकती रहे व उस सुरभि का अहसास हमें ऊर्जा देती रहे। बस कुछ परिवर्तनों की जरूरत है।

''रिश्तों को बदलने के बजाय, उनको समझने की ओर ध्यान लगाये जिससे कि रिश्ते और मजबूत होंगे, मजबूर नहीं।'' रिश्तों को Judge ना करें। हमें past को भुलाकर present में रिश्तों को निभाना चाहिये। एक बात याद रखें Relationship में लोग perfect हो ना हो, Relation perfect होना जरूरी है।

तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली संगीता दुगड़ के विचार :–

रिश्तें बहुत ही अनमोल और नाजुक होते हैं। थोड़ी सी ठेस लगते ही टूट कर बिखर जाते है। कहते है रिश्ते पक्षी की तरह होते है यदि पक्षी को जोर से पकड़ा जाए तो वे मर जाते है, उन्हें ढीला छोड़ा जाए तो वे उड़ जाते है। यदि उन्हें धीरे से आराम से पकड़ा जाए तो वे हमारे साथ होते हैं। वैसे ही रिश्तों को भी सहेज कर धीरे से रखना होता है तभी रिश्ते मधुर होते है और जीवन के लिए आफताब बन जाते हैं। रिश्तों की किताब को आफताब बनाने के लिए ''5 T'' को जीवन में अपनाना जरूरी है।

1. Trust – विश्वास वो तत्व है जो किसी भी रिश्ते को दीर्घजीवी बनाता है। विश्वास वो उर्वरा खाद है जिससे रिश्तें रूपी पेड़ फलता है। विश्वास के बिना रिश्ता बेजान हो जाता है कहा जाता है विश्वास विश्व की श्वांस है।

2. Tolerance – रिश्तों में समरसता लाने के लिए एक दूसरे की गलतियों को सहन करना व आपसी सामंजस्य से उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

3. Thank You – पारिवारिक व सामाजिक जीवन में एक दूसरे के सहयोग की अपेक्षा रहती है। धन्यवाद कहना जहां उच्च व्यवहारिकता का सूचक है वही धन्यवाद वह टॉनिक है जो बेजान रिश्तों में जान भरती है।

4. Togetherness – रिश्तों में जब तक साथ नहीं तो बात नहीं बनती है। अतः रिश्तों की डोर को मजबूत बनाने के लिए आपसी साथ–प्यार–स्नेह की आवश्यकता होती है।

5. Talk – बातचीत करते रहना नजदीकियों को बढ़ाता है। रिश्तों को मजबूत बनाता है।

अतः विश्वास की डोर को थामे, सहनशीलता व कृतज्ञ भावों के साथ यदि साथ–साथ रहे तो निश्चित ही रिश्तों की किताब आफताब बन जाएगी।

विशेष सूचना

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल व सभी शाखा मंडलों की बहनों को यह सूचित किया जाता है कि महिला मंडल की गणवेश में केवल लाल प्लेन, ब्लाउज ही पहना जाये इसके सिवाय कसीदा, जरी, किनारी, जामावार व किसी भी प्रकार का बोर्डर न लगाया जाये।

ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी - फरवरी 2020

प्रिय बहनो,

सादर जय जिनेन्द्र!

हम सभी अध्यात्म के मंच से जुड़े है और इससे जुड़ कर हम आत्म विकास की ओर अग्रसर होना चाहते है। इस ओर बढ़ने के लिए अध्यात्म ज्ञान आवश्यक है। कर्मवाद पुस्तक के द्वारा कर्म सिद्धान्त एवं संबोधि के द्वारा जीवन का सही बोध प्राप्त करने का इस ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी के माध्यम से हमें अवसर मिला है। जो भी बहनें इस प्रश्नोत्तरी से जुड़ी है वे सभी साधुवाद के पात्र है।

- जनवरी माह में कुल 98 क्षेत्र से 2056 प्रविष्टियां प्राप्त हुई।

- सक्रिय क्षेत्र - मुंबई-324, बालोतरा-206, अहमदाबाद-168, सूरत-135, जयपुर शहर-125, जसोल-68, राजसमंद-56, बारडोली-52, टापरा 46 एवं साउथ हावड़ा से 45 प्रविष्टियां प्राप्त हुई।

नोटः-• उत्तर फुल साइज पेज पर हाशिया छोड़ते हुए शुद्ध एवं जितना पूछा जाए उतना ही लिखें।

• उत्तर पुस्तिका पर अपना नाम, फोन नं. और पूरा पता, पिनकोड सहित लिखा हुआ ही मान्य किया जाएगा।

• अगर अधिक संख्या में प्रविष्टियां एक ही लिफाफे में भेजते हैं तो लिफाफे के ऊपर प्रविष्टियों की संख्या अवश्य लिखें।

• उत्तर महिने की 25 ता. तक श्रीमती मधु देरासरिया के पते पर अवश्य पहुंच जाए।

पताः-

Mrs. Madhu Jain Derasaria C/o Mr. Devendra Jain
5/C Meghsaraman Apt. Tower-I, Citilight-395007, Surat (Gujrat)
Mob. : 9427133069

प्रश्नोत्तरी

संदर्भ पुस्तकः- संबोधि पृष्ठ संख्या 54 से 63, कर्मवाद पृष्ठ संख्या 66 से 77

(अ) पुस्तक के आधार पर लिए गए वाक्यों में निम्न चार में से एक शब्द उसके साथ मेल नहीं खा रहा है, उसे हटाकर सही वाक्य बनाइये -

1. दृष्टिकोण, विकृति, आचरण, स्वप्न
2. कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष, व्यवहार-राशि, एकेन्द्रिय
3. अभिव्यक्ति, शरीर, आत्मा, समता
4. परिस्थिति, कर्मवाद, निमित्त, घटना
5. प्रतीक, क्षमता, मन, पुरुषार्थ
6. दर्शन, मोह, अज्ञान, प्रभावक तथ्य
7. अजीव, जीव, मुक्त, व्यवहार-राशि

8. क्षमता, योगात्मक, आत्मा, अवगुण

9. क्षमा, अप्रिय, समदृष्टि, प्रिय

10. अहिंसा, कर्म, धर्म, तितिक्षा

11. मुक्ति, स्वाध्याय, ध्यान, स्थिरता

12. तीर्थंकर, निरुपण, अहिंसा, रात्रि

13. निराशा, आत्मीयगुणों, स्वत्व, भय

14. समता, अहिंसा, मंगल, उर्मिया

15. अभिलाषा, तीर्थंच, मोक्ष, व्यक्ति

(ब) उल्टे सीधे लिखे शब्दों को संयोजित कर सही शब्द बनाएं –

1. जी रि मि भो प त

2. त हि सं म् वि

3. अ ह व्या त

4. ष्ठि अ ति त प्र ध क्रो

5. का ल कु शो

(स) केवल एक शब्द में उत्तर दीजिए –

1. कर्म के अलावा और कौन सा तत्व है जो जीव के विकास का कारण बनता है?

फरवरी माह के उत्तर

(अ) रिक्त स्थान की पूर्ति करें

1. अनुभवजन्य	2. अनुभूति	3. आत्मलीनो
4. अमनोज्ञ	5. अधिष्ठानम्	6. आत्मसाक्षात्कार
7. आनंद	8. आत्मसुख	9. अबाधाकाल
10. अस्तित्वकाल		

(ब) प्रश्नों के उत्तर गिनती में दीजिए –

1. तीन	2. चार	3. दो
4. दो	5. चार	6. दो
7. दो	8. दो	9. दो
10. दो		

(स)

1. आंकाक्षाओं का ज्वार, प्रमाद का अंधकार, कषाय की आग

2. आशा

जनवरी माह के विजेता

1.	श्रीमती मधु भूरा	गुलाबबाग (पुर्निया)	6.	सुश्री कमला जैन	लाडनूं
2.	श्रीमती दिव्या बुरड़	बालोतरा	7.	श्रीमती कमलेश जैन	दक्षिण हावड़ा
3.	श्रीमती मंजु संघवी	सान्तांकूज, मुंबई	8.	श्रीमती नीतू बाफना	R R नगर (बैंगलुरु)
4.	श्रीमती यशवंत सुतरिया	भीलवाड़ा	9.	श्रीमती रिंकू छाजेड़	विजयनगरम्
5.	श्रीमती पुखराज लुनावत	शिलोंग	10.	श्रीमती ममता बेताला	भुवनेश्वर

AKHIL BHARTIYA TERAPANTH MAHILA MANDAL

Attempt for **LIMCA BOOK OF RECORDS**

WOMEN ON WHEEL WOW RESPECT

LOG BOOK

Date : 8th March 2020
Branch Name :
Distance : .....Km
Rally Start Time : .....
Rally End Time : .....

Attested Gazetted Officer

1. .....
2. .....

Sr. No.	Name	Driving Lic. No.	Vehicle No.	Ph. No.	Email	Sigature

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को मिलने वाला अनुदान

1,21,000/– महासभा अध्यक्ष श्रीमान् सुरेशजी–लताजी गोयल (कलकत्ता) द्वारा सप्रेम भेंट।

51,000/– श्रीमान् कन्हैयालालजी–सुशीलाजी पटावरी दिल्ली द्वारा सप्रेम भेंट।

41,000/– स्व. श्रीमान् कन्हैयालालजी–चंदाजी नाहटा (बैंगलुरु) द्वारा सप्रेम भेंट।

21,000/– तेरापंथ महिला मंडल गुलाबबाग द्वारा भावना चौके हेतु सप्रेम भेंट।

11,000/– स्व. सिन्दूरमलजी–कान्ता देवी दफ्तरी (बैंगलुरु) द्वारा सप्रेम भेंट।

11,000/– योगेश जैन (जैन एण्ड कम्पनी) बनारस द्वारा सप्रेम भेंट।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार !

अध्यक्षीय कार्यालय : श्रीमती पुष्पा बैद – ''पावन'' बी–106/107, विद्युत नगर–बी, क्वीन्स रोड़, जयपुर – 302021
मो. : 9314194215, 8209004923 ईमेल pushpabaid312@gmail.com

महामंत्री कार्यालय : CA तरूणा बोहरा – 301, साधना पैलेस, मराठा कॉलोनी, दहिसर (पूर्व) मुम्बई – 400068
मो. : 8976601717 ईमेल tarunajain365@gmail.com

कोषाध्यक्ष कार्यालय : श्रीमती रंजु लुणिया – लुणिया मार्केटिंग प्रा. लिमिटेड, बड़ा बाजार, छेरा बस स्टॉप के पास, शिलोंग–793001 (मेघालय) मोः 94361033330, 8787645164 ईमेल lmplshillong@gmail.com

नारीलोक संपादन सहयोगी : श्रीमती गुलाब बोथरा मो : 9462342976

नारीलोक देखें website : www.abtmm.org